भाषा की उत्पत्ति

भाषा की उत्पति का प्रश्न बड़ा ही आकर्षक किन्तु बड़ा ही उलझा हुआ प्रश्न है। इस प्रश्न पर विचार अत्यन्त प्राचीन काल से होता आया है, पर अब भाषाविज्ञान वेत्ता इस प्रश्न को भाषा विज्ञान के क्षेत्र का नहीं मानते। कोई इसे मानव विज्ञान के क्षेत्र का मानता है, तो कोई प्राचीन इतिहास का। कुछ लोग ऐसे भी है जो कहते है कि भाषाविज्ञान एक विज्ञान है अतः इसके अन्तर्गत विचारणीय विषय वे ही सकते है, जिन पर विचार करने के लिए वैज्ञानिक और ठोस आधार हो, किन्तु भाषा की उत्पति - जो कदाचित् लाखों वर्ष पूर्व हुई थी - पर विचार करने के लिए ऐसे आधार का आभाव है।

भाषा विज्ञान 'भाषा' का विज्ञान है तो निश्चय ही भाषा का पूरा इतिहास और उसका हर रूप भाषाविज्ञान के अध्ययन का विषय है। ऐसी स्थिति में भाषा की उत्पति और उसके प्रारम्भिक रूप के अध्ययन को निश्चय ही इससे अलग नहीं किया जा सकता। और यह तर्क कि विचार करने के लिए सामग्री का अभाव है अतः उसे विषय से अलग माना जायेगा कोई तर्क नहीं है। विचार करते रहने से तो सम्भव है इस दिशा में हम कुछ आगे बढ़ते रहे किन्तु छोड़ देने पर तो यह प्रश्न जहाँ का तहाँ ही पड़ा रह जायेगा।

आधुनिक भाषा विज्ञान की दृष्टि से भाषा की उत्पति का प्रश्न उतना महत्वपूर्ण नहीं है। फिर भी भाषा - उत्पति सम्बन्धी विभिन्न मतों कि संक्षिप्त जानकारी से इस विषय के विकास का दिशा - निर्देश हो जायेगा। भाषा उत्पति सम्बन्धी मतों अथवा सिद्धान्तों को चार वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है।

[क] श्रद्धापर आधारित मत [ख] पूर्णरूप से अनुमानित मत

[ग] आंशिक अनुमानित मत [घ] विकासवादी मत।

[क] **श्रद्धापर आधारित मत** :— ईश्वरीय सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर ने जैसे सृष्टि के अन्य पदार्थों की रचना की वैसे ही उन्होने भाषा का सृजन भी किया अर्थात भाषा प्रकृति प्रदत है। मनुष्य जन्म से ही भाषा जानता है।

धार्मिक सिद्धान्त ईश्वरीय सिद्धान्त से मिलता जुलता इस मत के मानने वालों का विश्वास है कि उनका धर्म ही आदि धर्म है, उनका धर्मग्रंथ ही आदि धर्मग्रंथ है। उनके धर्मग्रंथ की भाषा ही आदि भाषा है, जिससे अन्य भाषाओं का विकास हुआ है। इस विश्वास के कारण ही वेदों को आदिग्रंथ मानने वाले —

वैदिक-संस्कृत को आदि भाषा मानते हैं। बाइबिल को आदि-ग्रंथ मानने वाले हिब्रू को आदि भाषा मानते हैं तो कुरान को आदि ग्रंथ मानने वाले अरबी को आदि भाषा स्वीकार करते हैं।

उपर्युक्त मतों का आधार श्रद्धा अथवा विश्वास है, तर्क नहीं; इसी से आज-कल प्रायः कोई विद्वान इन मतों की चर्चा नहीं करता। यह सर्व विदित स्वं प्रयोगों से सिद्ध तथ्य है कि बच्चा कोई भाषा सीख कर नहीं आता; ईश्वर किसी को कोई भाषा सिखाकर नहीं भेजता। विधिवत किए गए अध्ययन से आज यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि संसार की समस्त भाषाएं एक ही भाषा से उत्पन्न नहीं हुई हैं तथा कोई धर्म ग्रंथ आदि (सृष्टि के आरंभ से ~~विद्या~~ विद्यमान) नहीं है।